Dr. Kaushal Kumar
B.A part - I
Economics - II

Q. राष्ट्रीय आय की परिभाषा दिजिए। यह कैसे मापी जाती है? Define National Income. How is it measured?

OR

राष्ट्रीय की परिभाषित कीजिए तथा कुल राष्ट्रीय उत्पाद एवं शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में अन्तर स्पष्ट करें।

(Define National Devidend and distinguish between Gross National product and Net National product.)

OR

राष्ट्रीय आय की माप में कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।

(Examine the Defficulties in the measurement of National Income)

Ans:- अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय की धारणा बहुत ही महत्वपूर्ण है। किसी भी देश का आर्थिक विकास उसकी राष्ट्रीय आय पर निर्भर करता है तथा आर्थिक प्रगति को मापने का सर्वोत्तम साधन भी राष्ट्रीय आय ही है। अर्थशास्त्र में वितरण (Distribution) के क्षेत्र में भी राष्ट्रीय आय की धारणा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वास्तव में उत्पत्ति के विभिन्न साधनों के सहयोग से राष्ट्रीय आय का उत्पादन होता है और राष्ट्रीय आय को पुनः इन साधनों के बीच वितरित की जाती है।

राष्ट्रीय आय की परिभाषा में अर्थशास्त्रियों में मतैक्य नहीं है। विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने इसकी विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं, जिनमें, मार्शल, पीगू तथा फिशर की परिभाषाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मार्शल की परिभाषा (Difinition of Marshal

प्रो० मार्शल के अनुसार "किसी देश का श्रम एवं पूँजी उसके प्राकृतिक साधनों पर क्रियाशील हो कर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं का एक समूह उत्पन्न करते हैं

जिसमें सभी प्रकार की सेवाएँ सम्मिलित रहती हैं। यह देश की वास्तविक विशुद्ध आय या राष्ट्रीय लाभांश हैं।"

(The labour and Capital of country acting on its Natural resources produce annually a certain net aggregate of Commodities 'material and immaterial; Including services of all kinds this is true annual income or revenue of the Country or the National dividend.)

इस प्रकार, प्रो० मार्शल के अनुसार राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत हम उन सभी वस्तुओं और सेवाओं को लेते हैं जिनका उत्पादन एक साल के अन्तर्गत पूँजी एवं श्रम प्राकृतिक साधनों के सहयोग से करते हैं, लेकिन राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत कुल उत्पादों (Gross product) को न रखकर केवल शुद्ध उत्पादन (Net product) को रखा जाता है। यदि देश की पूँजी विदेशों में लगायी गयी है तो उससे प्राप्त आय को भी राष्ट्रीय आय में जोड़ दिया जाता है।

आलोचना (Criticisms) :- सैद्धान्तिक दृष्टि से प्रो० मार्शल की उपर्युक्त परिभाषा सही मालूम पड़ती है, परन्तु व्यवहारिक कठिनाइयों के कारण इसकी कई आलोचनाएँ की जाती हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(i) पहली कठिनाई यह है कि किसी राज्य के अन्तर्गत एक वर्ष के अन्दर असंख्य वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है। इन सभी वस्तुओं और विशेषकर सेवाओं की गणना सफलतापूर्वक कर लेना एक टेढ़ी खीर है।

(ii) दूसरी कठिनाई यह है कि यदि इन वस्तुओं और विशेषकर सेवाओं की गणना किसी प्रकार कर भी ले तो दोहरी गणना (Double counting) का भय बराबर बना रहता है। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यापारी की आय साल में 80 हजार रुपये है और उसमें से वह 2 हजार रुपये अपने क्लर्क को देता है, तो राष्ट्रीय के अन्तर्गत व्यापारी के आय जोड़ देने के बाद क्लर्क की आय जोड़ना ठीक नहीं है, अन्यथा दोहरी गणना (Double Counting) का दोष आ जायेगा लेकिन वास्तविक जीवन में इस दोष में छुटकारा पाना बहुत ही कठिन है।